षट्खंडागम पुस्तक-६ (फोल्डर नं. ००१४००)

मुख्य टाइटल

विषयसूची

प्राक्कथन ---------- १

Introduction ---------- i-iii

शंका-समाधान ---------- १

विषय-परिचय ---------- ११

विषय-सूची ---------- ३३

शुद्धि पत्र ---------- ४१

मूल अनुवाद और टिप्पण ---------- १-५०२

प्रकृतिसमुत्कीर्तन चूलिका ---------- १

धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा ---------- १

शंका-समाधानपूर्वक चूलिकाका अवतार व उसके भेदोंका निरूपण ---------- १

प्रकृतिसमुत्कीर्तनकी प्रतिज्ञा ---------- ५

प्रकृतिसमुत्कीर्तनके भेदोंका निर्देश तथा... ---------- ५

ज्ञानावरणीयका निर्देश तथा... ---------- ६

दर्शन व दर्शनावरणीयका लक्षण... ---------- ९

वेदनीयका निरूपण ---------- १०

मोहनीयका निरूपण ---------- ११

आयु, नाम, गोत्र व अन्तराय कर्मोंका निरूपण ---------- १२

ज्ञानावरणीयके पांच भेदोंका निर्देश ---------- १५

आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप व उसकके अवग्रहादि... ---------- १६

श्रुतज्ञान और श्रुतज्ञानावरणीयका लक्षण... ---------- २१

अवधान और अवधिज्ञानावरणका लक्षण... ---------- २५

मति-श्रुतज्ञानोंसे अवधिज्ञानकी भिन्नता... ---------- २६

मनःपर्ययज्ञान व उसके भेद तथा... ---------- २८

केवलज्ञान और केवलज्ञानावरणीयका स्वरूप एवं ---------- २९

दर्शनावरणीयके नौ भेदोंका एवं दर्शन व उसके ---------- ३१

दर्शनके स्वरूपमें भिन्न मतोंका दिग्दर्शन... ---------- ३३

सातावेदनीय व असातावेदनीयका लक्षण... ---------- ३५

मोहनीय कर्मके अट्ठाईस भेदोंका निरूपण... ---------- ३७

सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्यग्मिथ्यात्वका निरूपण ---------- ३९

चारित्रमोहनीयके भेद-प्रभेद... ---------- ४७

आयुकर्मके भेद व उनका लक्षण ---------- ४८

नामकर्मकी ब्यालीस पिण्डप्रकृतियोंका पृथक्... ---------- ४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गति व जाति नामकर्मोंके भेदोंका निरूपण---------- ४९
शरीर नामकर्मके भेदोंका निरूपण ---------- ६८
बन्धनके भेद ---------- ७०
संघातके भेद---------- ७०
संस्थान नामकर्मके भेदव उनके लक्षण ---------- ७१
अंगोपांग नामकर्मके भेद व उनके लक्षण---------- ७२
संहनन नामकर्मके भेद व उनके लक्षण ---------- ७३
वर्म, गन्ध, रस और स्पर्श...---------- ७४
आनुपूर्वी आदि नामकर्मके भेदोंका निरूपण ---------- ७६
गोत्र और अन्तराय कर्मके भेदोंका निरूपण ---------- ७७
स्थानसमुत्कीर्तन चूलिका ---------- ७९
स्थानसमुत्कीर्तनकी प्रतिज्ञा ---------- ७९
बन्धकस्थानोंके भेद---------- ८०
ज्ञानावरणीयकी पांच प्रकृतियोंका निर्देश... ---------- ८०
दर्शनावरणीय कर्मके तीन बन्धस्थानोंका निरूपण---------- ८२
वेदनीयके एक बन्धस्थानका निरूपण---------- ८७
मोहनीय कर्मके दश स्थानोंका निरूपण---------- ८८
आयुकर्मके बन्धस्थान ---------- ९९
नामकर्मके अट्ठाईस प्रकृति सम्बन्धी स्थान ---------- १०२
तिर्यग्गति नामकर्मके पांच स्थान ---------- १०४
मनुष्यगति नामकर्मके तीन स्थान---------- ११७
देवगति नामकर्मके पांच स्थान---------- १२२
गोत्र कर्मके बन्धस्थान ---------- १३१
अन्तरायकी पांच प्रकृतियोंका एक बन्धस्थान---------- १३२
प्रथम महादण्डक---------- १३३
प्रथमसम्यक्त्वके अभिमुख हुए जीवके बध्यमान...---------- १३३
प्रथमसम्यक्त्वीके द्वारा बध्यमान... ---------- १३३
सम्यक्त्वाभिमुख हुए मिथ्यादृष्टि...---------- १३५
द्वितीय महादण्डक---------- १४०
प्रतमसम्यक्त्वाभिमुख देव और नारकीके... ---------- १४०
तृतीय महादण्डक ---------- १४२
प्रथमसम्यक्त्वाभिमुख सप्तम पृथिवीके नारकी द्वारा...---------- १४२
उत्कृष्टस्थिति चूलिका---------- १४५
उत्कृष्टस्थितिके कथनकी प्रतिज्ञा---------- १४५
पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय... ---------- १४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपर्युक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट आबाधा.. ---------- १४८
आबाधासे हीन कर्मस्थिति... ---------- १५०
उत्कृष्ट स्थितिमें प्रदेशरचना...---------- १५२
सातावेदनीय, स्त्रीवेद, मनुष्यगति और ... ---------- १५८
उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट आबाधा---------- १५९
मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति व आबाधाका प्रमाण---------- १५९
सोलह कषायोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध... ---------- १६१
पुरुषवेदादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व उसकी आबाधा...---------- १६२
नपुंसकवेदादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध व...---------- १६३
नारकायु व देवायुका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध... ---------- १६६
तिर्यगायु और मनुष्यायुका उत्कृष्ट... ---------- १६९
द्वीन्द्रियादि प्रकृतियोंका उत्कृष्ट... ---------- १७२
आहारकशरीर, आहारकशरीरांगोपांग और तीर्थंकर...---------- १७४
उक्त तीनों प्रकृतियोंके आबाधाकालका प्रमाम---------- १७७
न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान और वज्रनाराचसंहननका... ---------- १७७
स्वातिसंस्थान और नाराचसंहननका---------- १७८
कुब्जकसंस्थान और अर्धनाराचसंहननका उत्कृष्ट... ---------- १७९
जघन्यस्थिति---------- १८०
जघन्यस्थितिके कहनेकी प्रतिज्ञा तथा...---------- १८०
पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण... ---------- १८२
पांच दर्शनावरण और असातावेदनीयका जघन्यस्थिति...---------- १८४
सातावेदनीयका जघन्य स्थितिबन्ध व आबाधा---------- १८५
मिथ्यात्वका जघन्यस्थिति बन्ध व आबाधा ---------- १८६
अनन्तानुबन्धी आदि बारह कषायोंका जघन्य...---------- १८७
संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य...---------- १८८
पुरुषवेदका जघन्य स्थिति बन्ध व आबाधा---------- १८९
स्त्रीवेदादिप्रकृतियोंका जघन्य...---------- १९०
नारकायु व देवायुका जघन्य...---------- १९३
तिर्यगायु और मनुष्यायुका जघन्य... ---------- १९३
नरकगति आदि प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबन्ध---------- १९४
आहारकशरीर आहारक शरीरांगोपांग और तीर्थंकर...---------- १९७
यशःकीर्ति और उच्च गोत्रके जघन्य...---------- १९८
सत्व, उदय और उदीरणाके न कहनेरूप शंकाका समाधान---------- २०१
सम्यक्त्वोत्पत्ति---------- २०३
सम्यक्त्वप्राप्तिके योग्य कर्मस्थिति...---------- २०३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्वप्राप्तिके योग्य जीवका निरूपण ---------- २०६
सर्वविशुद्धका लक्षण तथा अधःप्रवृत्त... ---------- २१४
अपूर्वकरणका निरूपण ---------- २२०
अनिवृत्तिकरणका निरूपण ---------- २२१
अधःप्रवृत्तकरणादि विशुद्धियों.... ---------- २२२
प्रथमसम्यक्त्वको उत्पन्न करनेवाले जीवके द्वारा... ---------- २३०
मिथ्यात्वके तीन भागोंका निरूपण ---------- २३४
पच्चीस पदवाला अल्पबहुत्व ---------- २३६
दर्शनमोहनीय कर्मके उपशमके.... ---------- २३८
दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके प्रारम्भ... ---------- २४३
दर्शनमोहनीयकी क्षपणाके निष्ठापन योग्य... ---------- २४७
प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरणसे लेकर... ---------- २६३
सम्यक्त्वप्राप्त करनेवाले जीवके ज्ञानावरणादि सात कर्मोंकी स्थिति... ---------- २६६
चारित्रको प्राप्त करनेवाले जीवके... ---------- २६७
संयमासंयम प्राप्तिका विधान ---------- २७०
अपूर्वकरणसे लेकर एकान्तानुवृद्धिके अन्तिम समय तक... ---------- २७४
संयमासंयमलब्धिके स्वामी व अल्पबहुत्व ---------- २७५
संयमासंयमलब्धिके स्थानोंका निरूपण ---------- २७६
संयमासंयमलब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व ---------- २७८
सकलचारित्रके तीन भेदोंका निर्देश... ---------- २८१
संयमलब्धिस्थानोंके तीन भेद व उनका स्वरूप तथा अल्पबहुत्व ---------- २८३
औपशमिक चारित्रकी प्राप्तिके विधानमें अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना... ---------- २८८
कषायोपशामनाके विधानमें स्थितिकाण्डकादिकोंका निर्देश व प्रमाण ---------- २९२
स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व ---------- २९७
मनःपर्ययज्ञानावरणादिकोंका बन्धसे देशघातित्वनिरूपण ---------- २९९
बारह कषाय और नौ नोकषायोंके अन्तरकरणका विधान ---------- ३००
अन्तरकरणके प्रथम समयमें होनेवाले सात करणोंका निरूपण ---------- ३०२
नपुंसकवेदके उपशमका निरूपण ---------- ३०३
स्त्रीवेदके उपशमका निरूपण ---------- ३०५
सात नोकषायोंके उपशमका विधान ---------- ३०६
तीन प्रकारके क्रोधके उपशमका निरूपण ---------- ३०८
तीन प्रकारके मानके उपशमका निरूपण ---------- ३०९
तीन प्रकारकी मायाके उपशमका विधान ---------- ३१०
तीन प्रकारके लोभके उपसम विधानमें.... ---------- ३१२
उपशान्तकषायका निरूपण ---------- ३१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपशान्तकषायके प्रतिपातका क्रम ---------- ३१७
क्रोधादिके उदयसे उपस्थिति पुरुषवेदी आदि उपशामकोंकी विशेषता ---------- ३३२
प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरण उपशामकसे लेकर प्रतिपातावस्थामें... ---------- ३३५
क्षायिक चारित्रकी प्राप्तिके विधानमें स्थितिकाण्डकादिकोंका निरूपण ---------- ३४२
ज्ञानावरणीयादिकोंकी स्थितिका स्थापन ---------- ३४२
चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें अधःप्रवृत्त... ---------- ३४३
प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरणका निरूपण ---------- ३४४
अपूर्वकरणके द्वितीयादि समयोंमें किये जानेवाले कार्य ---------- ३४५
प्रथमसमयवर्ती अनिवृत्तिकरणके आवास ---------- ३४८
अनिवृत्तिकरणके द्वितीयादि समयोंमें किये जाने वाले कार्य... ---------- ३४९
स्थितिसत्वका निरूपण ---------- ३५३
आठ कषाय व निद्रानिद्रादिकोंका संक्रमण... ---------- ३५५
चार संज्वलन और नौ नोकषायोंके अन्तरकरणका विधान ---------- ३५७
नपुंसकवेदके संक्रमणका विधान ---------- ३५८
स्त्रीवेदके संक्रमणका विधान ---------- ३६०
सात नोकषायोंके संक्रमणका निरूपण ---------- ३६१
अश्वकरणकालमें अपूर्वस्पर्द्धकोंका निरूपण ---------- ३६४
कृष्टिकरणकालमें क्रोधादिकृष्टियोंका निर्माण... ---------- ३७४
कृष्टिवेदककालमें कृष्टियोंका बंध, उदय... ---------- ३८२
क्रोधादिके उदयसे उपस्थित पुरुषवेदी आदि क्षपकोंकी विशेषता ---------- ४०७
क्षीणकषाय क्षपकका निरूपण ---------- ४११
सयोगकेवलीके निरूपणमें दण्डकपाटादि समुद्धातोंका स्वरूप ---------- ४१२
योगनिरोधकरणमें अपूर्वस्पर्द्धक और कृष्टियोंके करनेका विधान ---------- ४१४
उपान्त्य समयमें व्युच्छिन्न होनेवाली तिहत्तर प्रकृतियां ---------- ४१७
गत्यागति ---------- ४१८
नरकगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पादनकी सामग्री ---------- ४१८
तिर्यग्गतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री ---------- ४२४
मनुष्यगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री ---------- ४२८
देवगतिमें प्रथमसम्यक्त्वोत्पत्तिके योग्य सामग्री ---------- ४३१
नरकगतिमें प्रवेश और निर्गमनके गुणस्थानोंका निरूपण ---------- ४३७
तिर्यग्गतिमें... ---------- ४४०
पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती, मनुष्यिनी और भवनवासी... ---------- ४४२
मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और सौधर्मादि... ---------- ४४३
अनुदिशादि सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंके... ---------- ४४६
मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि... ---------- ४४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्यग्मिथ्यादृष्टिनारकियोंकी आगति----------४५०
सम्यग्दृष्टि नारकियोंकी आगति----------४५१
सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि... ----------४५२
सप्तम पृथिवीके सासादन सम्यग्दृष्टि...----------४५४
तिर्यंच संज्ञी मिथ्यादृष्टि...----------४५४
पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंज्ञी पर्याप्तकोंकी गति----------४५५
पंचेन्द्रिय तिर्यंच संज्ञी व...----------४५७
तेजस्कायिक व वायुकायिक जीवोंकी गति ----------४५८
तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि कर्मभूमिजोंकी गति----------४५८
तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी गति----------४६३
तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी गति----------४६४
तिर्यंच मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति----------४६६
तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि व ....----------४६७
मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि कर्मभूमिजोंकी गति ----------४६८
अपर्याप्त मनुष्योंकी गति----------४६९
मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी गति ----------४७०
मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि और... ----------४७३
मनुष्य मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भोगभूमिजोंकी गति----------४७६
मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि और... ----------४७७
देव मिथ्यादृष्टि और... ----------४७७
देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि और... ----------४८०
भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंकी आगति----------४८१
सनत्कुमारप्रभृति शतारसहस्नार कल्पवासी देवोंकी आगति----------४८१
आनतादि नवग्रैवेयकविमानवासी मिथ्यादृष्टि... ----------४८२
अनुदिशादि सर्वार्थसिद्धि.... ----------४८३
सप्तम पृथिवीके नारकियोंकी...----------४८४
छठी पथिवीके नारकियोंकी आगति.... ----------४८५
पंचम पृथिवीके नारकियोंकी आगति...----------४८७
चतुर्थ पृथिवीके नारकियोंकी आगति...----------४८८
तीन उपरिम पृथिवीके रकियोंकी आगति...----------४९१
तिर्यंच और मनुष्योंकी गति एवं गुणोंकी प्राप्ति ----------४९२
देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ----------४९४
भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्यतिषी देव-देवियां...----------४९५
बौद्धों द्वारा माना हुआ मोक्षस्वरूप एवं उसका निरसन----------४९७
सौधर्मादि सहस्रारकल्पवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति ----------४९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आनतादि नवग्रैवेययकविमानवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति----------४९८
अनुदिशादि अपराजित विमानवासी देवोंकी आगति और गुणोंकी प्राप्ति----------४९८
सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंकी आगति... ----------५००
परिशिष्ट
सूत्रपाठ----------१-३४
प्रकृतिसमुत्कीर्तन सूत्रपाठ ----------१
स्थानसमुत्कीर्तन सूत्रपाठ----------४
तीन महादण्डक---------- १३
उत्कृष्टस्थिति---------- १५
जघन्यस्थिति ---------- १७
सम्यक्त्वोत्पत्ति ---------- १९
गत्यागति ---------- २०
अवतरणगाथा-सूची ---------- ३४
न्यायोक्तियां ---------- ३५
ग्रंथोल्लेख ---------- ३५
पारिभाषिक शब्दसूची ---------- ३६
विशेष टिप्पण ---------- ४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org